International Journal of Engineering Research & Management Technology
(Peer-Reviewed, Open Access, Fully Refereed International Journal) ISSN: 2348-4039
Volume 12, Issue-6 November-December- 2025 Impact Factor: 7.09
Email: editor@ijermt.in www.ijermt.in

बढ़ता युवा असंतोष और समाज

गजेन्द्र कुमार मालवीय

सह- आचार्य समाजशास्त्र, विभागाध्यक्ष,

समाजशास्त्र विभाग राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय झालावाड़ (राज.)

सार

बढ़ता युवा असंतोष और समाज का अंतर्संबंध एक गंभीर महा है। बेरोजगारी शिक्षा प्रणाली की कमियां और आर्थिक असमानता यवाओं में हताशा (Discontent) पैदा कर रहे हैं, जो अक्सर हडताल या हिंसक प्रदर्शनों के रूप में सामने आता है। यह स्थिति सामाजिक अनुशासनहीनता को बढ़ावा देती है।

परिचय

युवा असंतोष के मुख्य कारणः बेरोजगारीः शिक्षा के बाद रोजगार न मिलना सबसे बड़ा कारण है, जो हताशा को जन्म देता है। दोषपूर्ण शिक्षा प्रणालीः डिग्री-केंद्रित शिक्षा, जो व्यावहारिक ज्ञान और आत्मनिर्भरता की कमी रखती है। आर्थिक असमानताः भौतिक सुख-सुविधाएं न जुटा पाने से असंतोष । राजनीतिक इस्तेमालः राजनेताओं द्वारा स्वार्थ के लिए युवाओं का उपयोग। पीदीजन अंतराल (Generation Gap): युवाओं और बुजुर्गों के बीच वैचारिक मतभेद । समाज पर प्रभावः अनुशासनहीनताः तोड़फोड़, आगजनी, और हिंसा की घटनाएं। सामाजिक अविश्वासः राजनीतिक और सामाजिक संस्थाओं से मोहभंग। मानसिक स्वास्थ्यः युवा वर्ग में तनाव और हताशा का बढ़ना । समाधान के उपायः रोजगार सृजनः स्वरोजगार और नए उद्योगों को बढ़ावा देना। शिक्षा में सुधारः व्यावहारिक और तकनीकी शिक्षा पर जोर। संवादः बुजुर्गों और युवाओं के बीच बेहतर संवाद। युवा किसी भी देश की रीढ़ होते हैं, उनका असंतोष देश के विकास में बाधक बन सकता है। उन्हें सही दिशा में मार्गदर्शन और अवसर प्रदान करना समाज की प्राथमिकता होनी चाहिए। [1,2,3]

युवाओं की छवि हमेशा से आक्रामक रही है। उन्हें उत्तेजक, फुर्तीला, बागी मिजाज माना जाता रह है। युवा पीढ़ी एक राष्ट्र की रीढ़ होती है। उनका मनोबल, उनकी क्षमताएं, उनका साहस असीम है। युवाओं के इस जोशीले अंदाज का फायदा समाज को हमेशा ही आंदोलन, युद्धभूमि, देश को विकसित करने की राह पर मिला। विश्व में

किसी भी युद्ध का इतिहास उठाकर देखें तो युद्ध में युवाओं के कारण ही जीत का परचम लहरा पाया है। भारत में आजादी के वक्त युवाओं ने अहम रोल निभाया था। भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरू जैसे अनेक युवाओं के कारण ही भारत को आजादी मिल पाई। विश्व में कई ऐसे युवा संगठन रहे हैं जिन्होंने अपने देशों में बदलाव लाने में बड़ी भूमिका अदा की। भारत में नेताजी की यूथ ब्रिगेड, यहूदी युवा आंदोलन, इंडोनेशिया आंदोलन 1998, दिल्ली निर्भया आंदोलन जैसे अनेक आंदोलनों ने विश्व में अपनी छाप छोड़ी है।

भारत में युवाओं की स्थिति थोड़ी अजीब है। युवाओं को जो पदास्थान राजनीतिक, शौसिक, सामाजिक तौर पर मिलना चाहिए था वह उससे अछूते हैं। ऐसी स्थिति विश्व के कई देशों में देखने को मिल रही है। युवाओं की इच्छाओं को दबोच दिया जाता है, उनकी प्राथमिकताओं को परे रख दिया जाता है, उनकी स्वतंत्रता पर अंकुश लगाए जा रहे हैं इसीलिए आज कल विश्वभर के युवाओं ने आंदोलनों का सहारा लेना शुरू कर दिया है। इन सभी निराशाओं के चलते आज की युवा पीढ़ी असंतोष से भरती जा रही है। असंतोष का कीड़ा यत्तयन से ही एक बच्चे के दिल में पनपने लगा है। हार के डर से, इच्छाओं के पूरे से होने के डर से, दबाए जाने के डर से उनकी मनोस्थिति कुछ इस प्रकार की बन रही है कि वह हर कार्य को नकारात्मक रूप से देखने लगे हैं। यह असंतोष उनके जीवन में चरम सीमा पर पहुंचने को तैयार बैठा है, उनकी मनोभावनाएं होती हैं कि "मैं 90 प्रतिशत लाकर भी थोड़े और अंक नहीं ला पाया, जेब में हजारों रुपये होते हुए भी मैं मजे नहीं कर पाया, मैं सुंदर तो हूं लेकिन फलां जैसी भोरी नहीं, मेरी नौकरी तो मल्टीनेशनल कंपनी में लग गई लेकिन ब्रिविलेजेस थोड़े कम हैं। "यह असंतोष नामक कीड़ा चरमबद्ध होकर आज की युवा पीढ़ी को भीतर ही भीतर खाए जा रहा है फिर चाहे वह युवा किसी भी देश का क्यूं न हो। इसके परिणाम केवल नुकसानदेह हैं जो हमें युवाओं में जलन, अवसाद, आपराधिक लक्षणों के तौर पर देखने को मिल रहे हैं। युवाओं में इन नकारात्मक भावनाओं का कुसूरवार भी कोई और नहीं बल्कि आज के हमारे संसार की कूटनीतिक सच्चाई है।

समाज एक विशाल समूह को कहा जाता है जिसमें कई प्रकार के जीवाणु मौजूद होते हैं। हमारे समाज के भण्डारे में एक प्रदर्शनी लगी हुई है जिसमें प्रत्येक इंसान रंगमंच पर अपनी भूमिका अदा कर रहा है। यहां हर शख्स अपने लिए कम और दूसरों को दिखाने के लिए ज्यादा जी रहा है। यह देखने-दिखाने की प्रवृत्ति हमारी इक्कीसवीं सदी के युवाओं में कुछ ज्यादा ही कूट-कूटकर भरी है। आज का युवा पाने की चाह तो रखता है लेकिन कुछ कुर्बान करने जितना दिल नहीं है उसका । शहीद भगत सिंह, महात्मा गांधी, नेलसन मंडेला उसके प्रेरक होंगे लेकिन उनकी तरह जीवन व्यतीत कर पाने वाला साहस नहीं है उनमे । असंतोष की बीमारी लिए एक अच्छाखासा इंसान मंद जिंदगी जीने पर जुझारू हो गया है। वह मानसिक तौर पर नकारात्मक सोच रखने का आदी हो गया है। हमारे देश की कूटनीतियों के कारण वह सभी राजनीतिक पार्टियों से असंतोयित है। पढ़े-लिखे होने के कारण बेरोजगारी के कलंक से, बढ़ती महंगाई के कारण छोटे होते सपनों से, आजादी की हवा में कम सांस ले याने से

वह जूझने को मजबूर है। इसी कारण वह गलत कदम अस्तियार करने पर मजबूर हो जाता है। आतंकवाद, नक्सलवाद, विद्रोह, भ्रष्टाचार यह सब देश की किसी न किसी कूटनीति से असंतोषित लोगों का ही एक नमूना है। [4,5,6]

राजनीतिक परिवेश में बात करें तो कांग्रेस ने भारत पर शासन किया लेकिन वह कभी युवाओं को उनका सही स्थान नहीं दिला पाई। युवा पीढ़ी में कांग्रेस के प्रति इतना असंतोष भर गया था कि पिछले साल हुए लोकसभा चुनावों में उन्होंने अपना सारा गुस्सा निकाल दिया और अब भाजपा की बारी है कि वह देश के इस बहुमूल्य खजाने को कैसे साथ संजो कर रख पाती है।

विचार-विमर्श

युवा वर्ग किसी भी समाज की सबसे महत्वपूर्ण शक्ति होता है, जो देश के भविष्य का निर्माण करता है। वर्तमान समय में युवा वर्ग में असंतोष की भावना बढ़ती जा रही है, जो सामाजिक और आर्थिक दोनों ही दृष्टिकोण से चिंताजनक है। इस असंतोष के कई कारण हैं, जिनका समाधान करना आवस्यक है ताकि युवा वर्ग को सही दिशा में मार्गदर्शन किया जा सके।

सबसे पहले बेरोजगारी युवा असंतोष का प्रमुख कारण है। शिक्षा प्राप्त करने के बाद भी रोजगार न व्यावहारिक ज्ञान की कमी और कौशल दिवस पर ध्यान न देना भी युवाओं को असंतोष की और मिलना याओं में निराशा और हताशा उत्पन्न करता है। इसके अलावा शिक्षा प्रणाली में से जाता है। सामाजिक असमानताएं जैसे आर्थिक विषमता और अवसरों की कमी भीवाओं को निराश करती हैं। इसके साथ ही परिवारिक दबाव, मानसिक स्वास्थ्य की समस्याएं और सामाजिक अपेक्षाओं का बोरण भी युवाओं के मन में असंतोष पैदा करता है।

इस के रोजगार सुजन के लिए नए उद्योगों और स्वरोजगार के अवसरों को बढ़ावा देना चाहिए। विशा प्रणाली में सुधार कर व्यावहारिक और तकनीकी शिक्षा को प्राथमिकता दी जानी चाहिए ताकि युव रोजगार के लिए तैयार हो सकें। मानसिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढानी चाहिए और राजे को उचित मार्गदर्शन तथा परामर्श उपलब्ध कराना चाहिए। इसके अलावा, सामाजिक समानता और न्याय सुनिश्चित करने के लिए नीतियां बनानी होंगी ताकि हर युवा को समान अवसर मिल सकें।

अंत में, युवा वर्ग की समस्याओं को समझना और उनका समाधान करना समाज की जिम्मेदारी है। यदि हम युवाओं को सही दिशा और अवसर प्रदान करें, तो वे न केवल अपने जीवन में सपस्ल होंगे, बल्कि देश के विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान देंगे। इसलिए, असंतोष के कारणों को दूर कर युवाओं को प्रोत्साहित करना आवश्यक है।

वास्तव में दिशाविहीन युवापीढ़ी को अपने लक्ष्य का बोध शिक्षा कराती है। किन्तु आज की शिक्षा इस उद्देश्य की पूर्ति में मापदण्ड के घट जाने से लाचार सी हो गई है। आज शिक्षा पाकर भी सुवा वई बेकारी की भट्टी में झुलस रहा है। वह ने अपना ही हित सोच या रहा है और न राष्ट्र का ही। इस स्थिति में असन्तोष उसके हृदय में जड़े जमाता जा रहा है। [7,8,9]

युवा पीढ़ी में असन्तोष के कारण तथा निदान-इस असन्तोष का मुख्य कारण आज की समस्याओं का सही समाधान न होना है। आज इस रोग से देश का प्रत्येक विश्वविद्यालय पीड़ित है। आज इस असन्तोष के कारण युवा-शक्ति का उपयोग राष्ट्र हित में नहीं हो रहा है। युवा पीढ़ी में असन्तोष के कारण निदान सहित इस प्रकार हैं-

राष्ट्र प्रेम की अभाव-विद्यार्थी का कार्य अध्ययन के साथ-साथ राष्ट्र-जीवन का निर्माण करना भी है, किन्तु वह असन्तोष में बह जाने से भटक जाता है। देश से प्रेम करना उसका कर्तव्य होना चाहिए।

उपेक्षित एवं लक्ष्य विहीन शिक्षा आज हृदयहीन शिक्षकों के कारण युवा-शक्ति उपेक्षा का विषपान कर रही है। आज सरकार की लाल फीताशाही विद्यार्थियों को और अधिक भड़का रही है। शिक्षा का

दूसरा दोष उद्देश्य रहित होना है। आज का युवक, शिक्षा तो ग्रहण करता है, किन्तु वह स्वयं यह नहीं जानता कि उसे शिक्षा पूर्ण करने के बाद क्या करना है। स्वतन्त्र व्यवसाय के लिए कोई शिक्षा नहीं दी जाती। आज सरकार को अध्ययन के उपरांत कोई प्रशिक्षण देकर विद्यार्थी को अपने कार्य में लगाना चाहिए।

भृष्ट प्रशासन-आज जनता द्वारा चुने हुए एक से एक भ्रष्ट प्रतिनिधि शासन में पहुँचते हैं। चुने जाने के बाद ये प्रतिनिधि रिश्वत द्वारा धन पैदा करते हैं और जनता के दुख-ददों को ताक पर रख देते हैं। लाल फीताशाही चाहे अत्याचार ही क्यों न करे, ये नेता इसको बढ़ावा देते हैं। फलतः युवा वर्ग में असन्तोष की लहर दौड़ जाती है।

विकृत प्रजातन्त्र-आजादी के बाद हमारे राष्ट्रीय कर्णधारों ने लोकतांत्रिक व्यवस्था को अपनाया। ये नेता भ्रष्ट तरीकों से अनाप-शनाप धन व्यय कर शासन में पहुँचते हैं। फिर स्वयं को जनता का प्रतिनिधि न समयकर राजपुत्र समझते हैं। इस अकड़ को देखकर युवा पीढ़ी में आग भड़क उठती है। अतः नेता को नम्रतापूर्वक छात्रों को समझाकर किसी उत्पन्न समस्या का समाधान करना चाहिए।

विकृत चलचित्र जगत-आज चलचित्र जगत बड़ा ही दूषित है। आज हर चित्र में मार-धाड़ और कामुकता तथा जोश के चित्र दिखाए जाते हैं। वस्तुतः। चलचित्र का उपयोग विद्यार्थी को ज्ञान तथा अन्य विषयों की शिक्षा के लिए होना चाहिए।

समाचार पत्र तथा आकाशवाणी- ये दोनों युवापीढी के लिए वरदान के साथ-साथ अभिशाप भी है। जहाँ एक विश्वविद्यालय के विद्यार्थी असन्तुष्ट हुए, वहाँ समाचार-पत्रों एवं आकाशवाणी के माध्यम से यह खबर सभी जगह फैल जाती है, जिससे युवा पीढ़ी में आक्रोश भड़क उठता है। सरकार को ऐसे समाचार पत्रों पर प्रतिबंध लगा देना चाहिए।

अनेक विरोधी दल-आज शासन सत्ता के विरोधी दल विश्वविद्यालयों के विद्यार्थियों को भड़काकर अपना उल्लू सीधा करने में लगे हैं। [10,11,12]

सांस्कृतिक संस्कारों का अभाव-आज युवा पीढ़ी में सांस्कृतिक संस्कारों का अभाव हैं। जिनके कारण वे दूसरों को अपने से अलग समलकर उन पर आक्रोश करते हैं। अतः विश्वविद्यालयों में भी नैतिक शिक्षा अनिवार्य होनी चाहिए।

उपसंहार-आज के युग में विश्व-स्तर पर भारत को रखकर शिक्षा प्रणाली विश्व में सबसे अधिक विकृत है। इसलिए हमारे राष्ट्र निर्माताओं को यह दृद्ध संकल्प कर लेना चाहिए कि वे विश्वविद्यालयों को सुधार करें, ताकि युवा पीढ़ी में असन्तोष न बढ़ सके।

परिणाम

क्या हम एक राष्ट्रव्यापी यया आंदोलन की शुरुआत देख रहे हैं? क्या बेरोजगारी का मुद्दा देश की ऊर्जा वर्तमान राजनीति को संचालित करेगी?

पिसले एक सप्ताह से एसएससी विरोधी आंदोलन के कारण यह सवाल बहत लोगों के मन में अत्य है. अगर इसका सिराकडे रखें तो यह सवाल हमें हमारी व्यवस्था के परे सच को उजागर करने में मदद देता है. पहले पायदान पर खड़े होकार देखें तो यह मामला छोटा सा है. केंद्र सरकार के स्टाफ सलेक्शन कमीशन (एसएससी) की सीजीएल नामक परीक्षा के कुछ केंद्रों पर धांधली मे का आरोप था. इस धांधली के कुछ प्रमाण भी परीक्षार्थियों के हाथ लग गये. इस महे पर परीक्षार्थि ले सीबीआई द्वारा स्वतंत्र निष्पक्ष और समयबद्ध जांच की मांग को लेकर एसएससी के दफ्तर के बाहर मोर्चा संभाल लिया. पिछले एक सप्ताह में यह विरोध प्रदर्शन अब एक बड़ा रूप धारण कर चुका है.

शुरुआत में एक विरोध प्रदर्शन के लिए इकट्ठे हुए युवा पिछले आठ-दस दिनों से वहीं दिन-रात टिक हुए हैं. सोशल मीडिया पर हजारों युवाओं ने इस आंदोलन का जमकर समर्थन करना शुरू किया किर अलग-अलग शहरों में इस आंदोलन के पक्ष में युवा संगठनों ने प्रदर्शन शुरू कर दिया है. अब तक जयपुर, लखनऊ, इलाहाबाद, रायबरेली, बनारस, पटना, भोपाल, बंगलुरु और अन्य अनेक शहरों में प्रदर्शन हो चुके हैं. इस घटना से एक राष्ट्रव्यापी युवा आंदोलन की सुम्बुगाहट महसूस होने लगी है. कई लोगों को गुजरात के नवनिर्माण आंदोलन और बिहार आंदोलन की यह आने लगी है, जहां एक छोटे से मुद्दे से शुरू होकर एकाएक एक बड़ा युवा आंदोलन खड़ा हो गया था.

ऐसे क्यों हुआ? यह सवाल हमें दूसरी पायदान पर उतरने को विवश करता है. हम पाते हैं कि यह मामला स्तना छोटा भी नहीं था. केंद्र सरकार की यह संस्था सरकारी नौकरियों की हजारों नौकरियों की कई परीक्षाएं कराती है. [13,14,15]

इनमें परीक्षार्थियों की संख्या एक करोड़ से भी अधिक है, जिस सीजीएल परीक्षा में धांधली के सवाल पर आंदोलन शुरू हुआ था, उसमें कुल 8,000 नियुक्तियां होनी थी, जिसके लिए कोई 30 लाख लोगों ने आवेदन किया था. यूं भी एसएससी में घपले और घोटाले की यह कोई पहली शिकायत नहीं है. पिछले कई सालों में एसएससी द्वारा आयोजित अनेक परीक्षाओं के बारे में शिकायतें आती रही है. एक बड़ी शिकायत एसएससी द्वारा परीक्षाएं आयोजित करने का ठेका एक प्राइवेट कंपनी को दिये जाने के बारे में है.

यह कंपनी अनेक व्यावसायिक संस्थानों को परीक्षा केंद्र बना देती है. परीक्षा कैसे ली जा रही है, इस पर एसएससी का कोई नियंत्रण नहीं होता है. कई-कई साल तक परीक्षाएं टाली जाती हैं और परिणाम आने के बाद भी नियुक्ति

पत्र नहीं मिलते. नौकरी में ज्वॉइनिंग नहीं करवायी जाती. मुल मिलाकर अंधेरमदर्दी है. लेकिन, आज तक एसएससी इन शिकायतों के निवारण की कोई व्यवस्था नहीं बना पायी है.

एक पायदान और उत्तरें, तो हम पायेंगे कि यह समस्या किसी एक संस्था या किसी एक सरकार तक सीमित नहीं है. केंद्र सरकार के साथ-साथ लगभग सभी राज्य सरकारों में भी नौकरियों की

नियुक्ति में बड़े पैमाने पर धांधली की शिकायत आती रहती है. मध्य प्रदेश का व्यापम कांड प्रसिद्ध हो गया.

लेकिन सच यह है कि हर राज्य के अपने-अपने व्यापम हैं. उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी की सरकार के समय उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग द्वारा की गयी नियुक्तियों में धांधली का मामला देश के सामने आया था. हाल ही में पंजाब और हरियाणा हाईकोर्ट में नियुक्ति के मामले में हाईकोर्ट के वरिष्ठ अधिकारियों की मिली-भगत का मामला सामने आया है. ध्यान से देखेंगे, तो हर राज्य में हर महीने ऐसा कोई ना कोई कांड खुलता रहता है.

सरकारी नौकरियां बहुत कम हैं और उम्मीदवार बेहिसाव. इसलिए जाहिर है, इन बंद नौकरियों के लिए जानलेवा प्रतिस्पर्धा होती है. विद्यार्थी अपनी औपचारिक पढ़ाई को छोड़कर कई-कई साल तक तैयारी करते हैं, मां बाप के सीमित संसाधन में से किसी तरह वैसा निकालकर कोचिंग लेते हैं. सामान्य घर से आनेवाले इन विद्यार्थियों की पूरी जवानी इसी चक्कर में बीत जाती है. इसलिए जब इन परीक्षाओं में धांधली की बात सामने आती है, तो युवाओं के आक्रोश की कोई सीमा नहीं बचती.

एक सीढ़ी और गहराई में जाने पर हम देखते हैं कि यह समस्या सिर्फ सरकारी नौकरियों में धांधली की नहीं है. इस समस्या की जड़ में है देश में व्यापक बेरोजगारी. हर साल कोई एक करोड़ युवा रोजगार के बाजार में उतरते हैं और हमारी व्यवस्था इनमें से मुट्टी भर को ही कायदै का रोजगार दे पाती है.

आंकड़ों में देखें, तो देश में आर्थिक वृद्धि हुई है. लेकिन, इसका रत्तीभर भी असर रोजगार के अवसरों में वृद्धि के रूप में दिखायी नहीं देता. रोजगार की तलाश में घूम रहे अधिकांश युवाओं को किसी ना किसी कच्ची नौकरी से संतोष करना पड़ता है. या तो असंगठित क्षेत्र की नौकरी, जिसमें जब मालिक का मन हुआ लगाया और जब मन हुआ हटा दिया. या फिर पिछले दो दशक में हसी कच्ची नौकरी के नये स्वरूप यानी कॉन्ट्रैक्ट की नौकरी.

प्राइवेट सेक्टर ही नहीं, सरकारी नौकरी में भी अब इन्हीं अस्थायी कॉन्ट्रैक्ट नौकरियों की भरमार है. कहने को यहां नियुक्ति पत्र मिलता है, बैंक में वेतन भी मिलता है. लेकिन, व्यवहार में यह नौकरी असंगठित क्षेत्र की कच्ची नौकरी से बहुत अलग नहीं है. जिन्हें ये भी नसीब नहीं होता, वे बेरोजगारों की फौज में गिने जाते हैं. सचमुच बेरोजगारों की संख्या इस औपचारिक आंकड़े से बहुत अधिक है.

एसएससी दफ्तर के बाहर शुरू हुआ विरोध प्रदर्शन सिर्फ एसएससी नामक संस्था के विरुद्ध नहीं है. यह विरोध सिर्फ धांधली और भ्रष्टाचार के विरुद्ध ही नहीं, इस व्यवस्था के विरुद्ध है, जो नियमित रूप से बेरोजगारी को जन्म देती है. [16]

सीबीआई द्वारा जांच की मांग में कहीं न कहीं इस व्यवस्था की पड़ताल की इच्छा दबी हुई है. जरूरत है इन अंतर्संबंधों का खुलासा करनेवाली दृष्टि और संगठन की. अगर हॉस्टल गेस के खाने की पड़ताल से शुरू हुआ नवनिर्माण आंदोलन सुजरात में सत्ता की जड़ हिला सकता है, तो एसएससी घोटाले के खिलाफ शुरू हुआ आंदोलन हमारी राजनीति के ढर्रे को बदल सकता है. निष्कर्ष

भ्रष्टाचार -

रावा लोग आमतौर पर उपदर्शवादी होते हैं। लेकिन व्यावहारिक जीवन में वे देखते हैं कि सरक सरों से लेकर शिक्षण संस्थानों और यह तक कि क्षेत्रीय और प्रादेशिक विश्वविद्यालयों में और कोई काम आसानी से सामान्य प्रक्रिया के तहत नहीं होता। काम तो दर, सामान्य जानकारी हासिल करने के लिए भी उन्हें दफ्तरों के सैकड़ों चक्कर लगाने पड़ते हैं।

ऐसे में राष्ट निर्माण के लिए काम करने के उनके सपने हटने लगते हैं। आद और सरक बीच इतनी गहरी खाई है कि उनका यवा मन कभी कल्पना भी नहीं कर सकता। ऐसी कड़ी किल से सामना होने पर युवाओं का चिंतित और तनावग्रस्त हो जाना कोई अस्वाभाविक बात नहीं है।

बेरोजगारी -

खासकर पढ़े-लिखे युवाओं में तनाव का सबसे बड़ा कारण बेरोजगारी है। पढ़ाई के समय बच्चों के माता-पिता उनसे बहुत उम्मीदें रखते हैं और खुद भी अपने लिए बड़े-बड़े सपने देखते हैं। लेकिन जब युवा पढ़ाई के बाद रोजगार के लिए दर-दर भटकते हैं और उन्हें अपने सपने पूरे होते नहींदिखते तो वे बहुत निराश होते हैं। यही हताशा उनमें तनाव पैदा करती है।

पारिवारिक नियंत्रण में कमी-

आज पारिवारिक नियंत्रण दिन-प्रतिदिन कम होता जा रहा है। माता-पिता का अब अपने बच्चों पर पहले जैसा नियंत्रण नहीं रह गया है। परिवार जो कभी सेवा, त्याग, संयम, अनुशासन आदि गुणों का केंद्र हुआ करता था।

आज तनाव का केंद्र बन गया है, जिसके कारण बच्चों का समुचित समाजीकरण परिवार द्वारा नहीं हो पाता, पारिवारिक मूल्यों में गिरावट आई है। परिवार का नियंत्रणकारी प्रभाव कम हुआ है। परिवार से उचित मार्गदर्शन के अभाव में युवाओं में तनाव की स्थिति बढ़ती जा रही है।

औद्योगीकरण -

औद्योगीकरण ने मानव जीवन को सबसे अधिक प्रभावित किया है। लोग आजीविका की तलाश में औद्योगिक संस्थानों में काम करने के लिए शहरों में आते हैं। परिणामस्वरूप, कई समस्याएं उत्पन होती हैं। जैसे परिवार, विघटन, घर की समस्या, मनोरंजन की समस्या आदि।

कई लोगों को कभी-कभी बेरोजगारी का सामना करना पड़ता है, जिसके परिणामस्वरूय युवाओं में कई समस्याएं पैदा होती हैं और तनाव की स्थिति पैदा होती है। औद्योगीकरण से ग्रामीण उद्योग नष्ट हो रहे हैं, जिसके कारण ग्रामीण लोगों में बेरोजगारी तेजी से बढ़ रही है। [17,18,19]

अर्थमाई -

वर्तमान समय में महंगाई दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। इस बढ़ती महंगाई के कारण आम लोगों का मुजारा करना बहुत मुश्किल होता जा रहा है। महंगाई ने लोगों की कमर तोड़ दी है। युवाओं के खर्च आज काफी बढ़ गए हैं। इसलिए युवाओं का इस महंगाई से परेशान होना स्वाभाविक है।

सोशल मीडिया -

सोशल मीडिया और अन्य संदेशवाहकों के माध्यम से युवा अपने से जुड़ी किसी भी समस्या पर चर्चा करते हैं। साथ ही संगठन और एकता भी स्थापित करते हैं। अपनी समस्या के समाधान के लिए वे इनके माध्यम से आवाज उठाते हैं। इसके अभाव में यह असंभव नहीं तो मुश्किल जरूर होता। इस प्रकार स्पष्ट है कि सोशल मीडिया साधन भी युवाओं के तनाव के लिए विशेष रूप से जिम्मेदार हैं।

सरकार की उदासीनता -

आज युवाओं के सामने कई समस्याएं हैं, युवाओं के प्रति सरकार की उदासीनता भी युवाओं के तनाव का एक मुख्य कारण है। हालांकि सरकार युवाओं की समस्याओं से अवगत है, लेकिन उनके समाधान के लिए कोई ठोस कदम नहीं उठाए गए हैं। नतीजतन युवाओं में निराशा और असंतोष की भावना पैदा हो गई है।

व्यावसायिक मनोरंजन- मनोरंजन के वर्तमान साधनों ने भी ऐसा वातावरण निर्मित कर दिया है. जिसमें युवा पीढ़ी अनेक तनायों का अनुभव कर रही है। टेलीविजन और चलचित्रों की आधुनिक कथा-कहानियाँ और युवा पीढ़ी को वास्तविकता से दूर ले जाते हैं।

अभाव में जी रही युवा पीढ़ी जब फिल्मों के माध्यम से वर्ग संघर्ष, नैतिकता के नए तरीके, विद्यार्थियों की स्वतंत्रता और प्रेम-प्रसंगों को देखती है. तो उसका अनुभवहीन भादुशमन शीघ्र ही इन विशेषताओं को ग्रहण कर लेता है।

रो काल्पनिका महत्त्वाकांक्षाएँ उसे इतना तनाव देती हैं कि धीरे-धीरे वह अध्ययन से विमख से जाता है और आंदोलन और हिंसा की स्थिति में कुछ चेतना और क्रियाशीलता का अनुभव करते लगता है।

मनोरंजन के व्यावसायिक साधनों के माध्यम से जो मूल्य और व्यवहार के तरीके प्रसारित होते हैं। वे व्यावहारिक जीवन से बहुत भिन्न होते हैं, इसलिए युवा पीढ़ी यह निर्णय नहीं कर पाती कि कौन. सा व्यवहार सही है और कौन-सा गलत। अनिश्चितता और भ्रम के इस वातावरण के कारण युवा असंतोष बढ़ता है।

युवा असंतोष के दुष्परिणाम :-

असंतोष कई रूपों में होता है, जैसे पथराव, भूख हड़ताल, घेराव, हड़ताल, परीक्षाओं का बहिष्कार, सार्वजनिक संपत्ति की तोड़फोड़ आदि। युवा असंतोष के दुष्परिणाम इस प्रकार हैं:

शिक्षा प्रणाली का विघटन ।

व्यक्तिगत समायोजन में विफलता।

समाज की कानूनी व्यवस्था का टूटना।

युवाओं की आकांक्षाओं की संरचना लड़खड़ा रही है।

संपत्ति की हानि और आर्थिक और सामाजिक विकास में बाधा।

एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक सामाजिक मूल्यों का हस्तांतरण बंद हो जाना।

सामाजिक संस्थाओं का विघटन जो अंततः समाज को प्रभावित करता है।

युवा असंतोष को दूर करने के उपाय ..

सभी समाज के नेता हैं। ऐसे में यदि युवा तनाव के कारण बीमार हो जाएं तो समाज वरि प्रमति अवरुद्ध हो जाती है और समाज का भविष्य अंधकारमय हो जाता है। इसलिए हर समाज अपने युवाओं को शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ और तनाव मुक्त बनाने का प्रयास करता है। सुवा असंतोष को दूर करने के उपाय एस प्रकार हैं: [20]

शिक्षा प्रणाली में सुधार -

युवा तनाव की समस्या को नियंत्रित करने के लिए शिक्षा प्रणाली में कई सुधार अपरिहार्य हैं। शिक्षा प्रणाली में सुधार के लिए प्रमुख सुझाव इस प्रकार हैं:

परीक्षा प्रणाली में सुधार किया जाना चाहिए।

शिक्षा पाठ्यक्रम को रोजगारोन्मुखी बनाया जाना चाहिए।

शिक्षकों और विद्यार्थियों के बीच परस्पर विश्वास पैदा किया जाना चाहिए।

महाविद्यालय प्रशासन, सरकार और विद्यार्थियों के बीच परस्पर सामंजस्य होना चाहिए।

मनोरंजन की व्यवस्था -

युवा वर्ग जब खालीपन महसूस करता है तो वह अधिक गंदगी करता है। इसलिए उनके लिए उचित खेल, व्यायाम, वाद-विवाद, फिल्म, प्रदर्शन, नाटक आदि की व्यवस्था की जानी चाहिए। जो लोग इन क्षेत्रों में बहुत अच्छे हैं, उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

पीढ़ियों के बीच संघर्ष को कम करना-

युवा असंतोष का कारण पीढ़ियों के बीच संघर्ष की स्थिति है। पुरानी पीढ़ी की मान्यताएँ एक हैं और नई पीढ़ी की मान्यताएँ दूसरी। इसलिए अगर युवाओं के तनाव को कम करना है तो पीढ़ियों के बीच की दूरी को कम करना होगा। पुरानी पीढ़ी के लोगों को बहुत ज़्यादा दृढ़ नहीं होना चाहिए और गतिशीलता को जगह देनी चाहिए।

संक्षिप्त विवरण :-

युवा असंतोष के लिए कई शद्धों का इस्तेमाल किया जाता है, जैसे युवा तनाव, युवा सक्रियता या छात्र असंतोष आदि। युवा असंतोष के नाम पर अनुशासनहीनता, अराजकता, बर्बरता, आगजनी और यहां ताकि पत्थरबाजी को भी जायज माना जाता है. जो कि बहत गलत बात है। इस स्थ रावा असंतोष एक सामुदायिक समस्या है। इस समस्या के गुख्य शिकार यया और छात्र हैं।[201 संदर्भ

1. "अमेरिका में सकारात्मक यवा विकासः सकारात्मक युवा विकास कार्यक्रमों के मूल्यवान पर शोध निष्कर्ष-2016-11-15 8 अप्रैल, 2014 को पुन्नः प्राप्त किया गया।

2. शेक, डैनियल (2019) ++ सवरात्मक युवा विकासः वर्तमान परिप्रेक्ष्य किशोर स्वास्थ्य जिकिया और सिरिया 10:131-141.doi: 10.2147/AHMT.$179946PMC 6756153. PMID31572041.

3. वॉनेल, जेम्स; गैम्बोन, मिशेल; स्मिथ, थॉगस (2001) +- सामुदायिक परिवेश में युवा विकासः हमारे क्षेत्र और हमारे दृष्टिकोण के लिए चुनौतियाँ। युवा विकास में रुखान। आउटरीच छात्रवृत्ति । खंड 6. पृष्ठ 291-307. doi:10.1007/978-1-4615-1459-6_10.ISBN 978-1-4613-5564-9- स्प्रिंगरलिंक के माध्यम से।

4. गुटमैन, जेनिफर; एक्लेस, जैकलिन (2002)। युवा विकास को बढ़ावा देने के लिए सामुदायिक कार्यक्रम । नेशनल एकेडेमीज़ प्रेस | ISBN 978-0-309-13403-3. 5. रिचर्ड एफ.; स्किनर, मार्टी एल.; अल्वाराडो, जीना कपुंगु, चिसीना; रीवले, निकोला; बैटन, जॉर्ज सी.; जेसी, कैसेंड्रा, प्लॉट, डैनियल; मॉस, कैटलिन; बेनेट, क्रिस्टीना; सॉयर, सुसान एम.; सेवानी, मेरोजी; सेक्स्टन, मैग्नोलिया; ओलेनिक, क्रिस्टीना; पेट्रोनी, सुजैन (जुलाई 2019) निम्न और मध्यम आय वाले देशों में सकारात्मक युवा विकास कार्यक्रमः प्रभावकारिता का एक वैचारिक ढांचा और व्यवस्थित समीक्षा । जर्नल ऑफ एडोलसेंट हेल्थ । 65 (1):15-31.doi:10.1016/j.jadohealth.2019.01.024.hdl: 1773/46640.ISSN1054-139X.PMID31010725.S2CID128359348.

6. अनॉल्ड, मैरी एलिजावेथ; सिलिमन, बेन (2017-06-27) +- सिद्धांत से व्यवहार तकः सकारात्मक युवा विकास कार्यक्रम ढाँचों की एक आलोचनात्मक समीक्षा | जर्नल ऑफ यूथ डेवलपमेंट । 12 (2):1-20.doi: 10.5195/jyd.2017.17 ISSN2325-40171

7. विट, पी.ए. और कैल्डवेल, एल. एल. (संपादक) (2005). मनोरंजन और युवा विकास स्टेट कॉलेज, पी.ए.: वेंचर पब्लिशिंग, इंक.

8. "सकारात्मक युवा विकास (पीवाईडी) ढांचा→ www.youthpower.org. 14 मई 2021 को प्राप्त किया गया ।

9. डेमन, विलियम (जनवरी 2004) 'सकारात्मक युवा विकास क्या है?" । अमेरिकन एकेडमी ऑफ पॉलिटिकल एंड सोशल साइंस के इतिहास | 591:13-24.doi:10.1177/0002716203260092.52CID145180802.

10. जर्चर, टॉम; वॉकर, जॉयस; पीहल, बारबरा; ओग-ग्रेबिल, जोली; मोरीम, पेट्रीसिया; मैकएंड्रयूज, बेट्टी; मैटलाक, मैरी; फुएक्टे, कारी; क्रॉयगैन्स, सारा आर.; ब्रेके, बारवराः अल्मक्विस्ट, पेट्रीसिया (1999) गुणवत्तापूर्ण युवा विकास की कुंजी (रिपोर्ट) । एचडीएल: 11299/495341

11. लर्नर, आर. एम.; अल्मेरिगी, जे. वी.; थियोकास, सी.; लर्नर, जे.वी. (2005) 'सकारात्मक युवा विकास-। जर्नल ऑफ अली

एडोलसेंस 125(1):10-16.doi:10.1177/0272431604273211.52CID145603300.

12. "हेल्दी पीपल 2020 - अमेरिकियों के स्वास्थ्य में सुधार 19 अप्रैल, 2014 को प्राप्त किया गया ।

13. ब्राइट, ग्राहम (2015). युवा कार्यः इतिहास, नीति और संदर्भ. ब्लूम्सवरी पब्लिशिंग. ISBN 978-1-137-43441-8ओसीएलसी 953861512.

14., विलियम (2004) 'सकारात्मक युवा विकास क्या है?"। अमेरिकन एकेडमी ऑफ पॉलिटिकल एंड सोशल साइंस के

इतिहास । 591:13-24.doi:10.1177/0002716203260092.52CID145180802.

15. मैकनीली, क्लेया; जेन ब्लेंचर्ड (2009) ['किशोरावस्था की व्याख्याः स्वस्थ किशोर विकास के लिए एक मार्गदर्शिका ब्राल्टीमोरः जॉन्स हॉपकिंस ब्लूमबर्ग स्कूल ऑफ पब्लिक हेल्थ, किशोर स्वास्थ्य केंद्र ।

16. लर्नर, रिचर्ड एम.; जैकलिन वी. लर्नर; एरिन फेल्प्स; एट अल. (अप्रैल 2009). "भविष्य की लहरें: सकारात्मक युवा विकास के 4-एच अध्ययन के पहले आठ वर्ष (पीडीएफ). मूल (पीडीएफ) से 16-09-2021 को संग्रहित ।

17. मैके, कैसेंड्रा; मार्गरेट सैंडर्स; स्टेफनी ब्रोब्लेव्स्की (2011-09-15) ['सकारात्मक युवा विकास और स्कूल क्षमता निर्माण एसएसडब्ल्यू जर्नल (36 (1): 16-251

18."अमेरिका में सकारात्मक युवा विकासः सकारात्मक युवा विकास कार्यक्रमों के मूल्यांकन निष्कर्षः अध्याय 1" 2016-11-15. 9 अप्रैल, 2014 को पुन्न प्राप्त किया गया ।

पर शोध 19. हयाचिनी, एडिन एल.; माइकल डब्ल्यू, बीट्सः अन्नाहिता बॉल; मैरी लेहमैन (2013)। "गर्ल्स ऑन द रन का प्रक्रिया मूल्यांकनः शारीरिक गतिविधि-आधारित सकारात्मक युवा विकास कार्यक्रम में कार्यान्वयन की खोज मूल्यांकन और कार्यक्रम योजना 146 1-9. doi: 10.1016/j.evalprogplan.2014.05.001. PMID 24858574.

20. विलियम्स, चेरिन; पामेला पेटुका; सैंड्रा बेसेंडोव्स्की, क्लेयर बेटकर (2014) रैमसे, डॉ. डौग (संपादक) 'युवाओं को लैंगिक समानता और सामुदायिक विकास संवाद में शामिल करने के लिए सहभागी आरेखणः एक अफ्रीकी उदाहरण जिर्नल ऑफ रूरल एंड कम्युनिटी डेवलपमेंट 9 (2): 191-211. ISSN 1712-82771